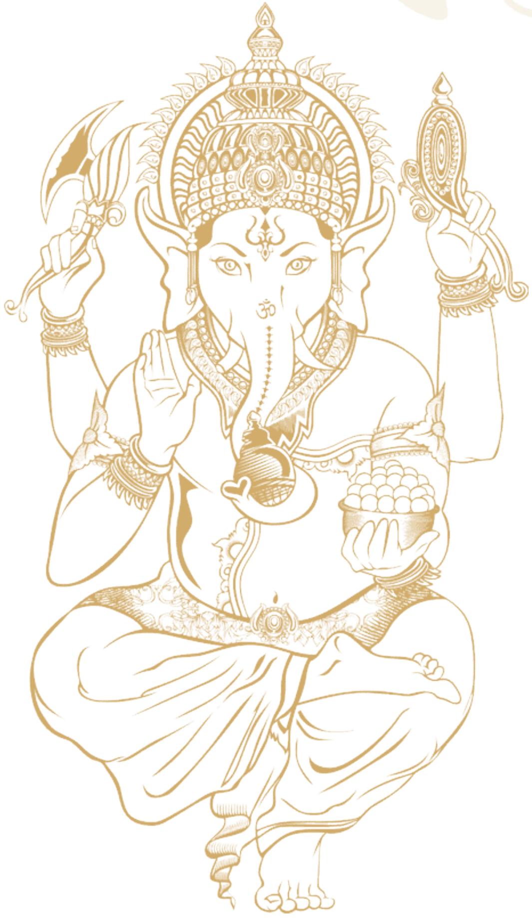

Sandeep Bajaj

31 Dec 1971

07:49 PM

Agra

Model: Web-MyKundli

Order No: 119192701

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**31/12/1971**
दिन	शुक्रवार
जन्म समय	**19:49:00 घंटे**
इष्ट	31:44:18 घटी
स्थान	**Agra**
राज्य	Uttar Pradesh
देश	India

अक्षांश	27:09:00 उत्तर
रेखांश	78:00:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:18:00 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	19:31:00 घंटे
वेलान्तर	-00:02:41 घंटे
साम्पातिक काल	02:08:25 घंटे
सूर्योदय	07:07:16 घंटे
सूर्यास्त	17:34:12 घंटे
दिनमान	10:26:56 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	शिशिर
सूर्य के अंश	15:46:54 धनु
लग्न के अंश	15:45:51 कर्क

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	कर्क - चन्द्र
राशि-स्वामी	**मिथुन - बुध**
नक्षत्र-चरण	**आर्द्रा - 2**
नक्षत्र स्वामी	राहु
योग	ब्रह्म
करण	बव
गण	मनुष्य
योनि	श्वान
नाड़ी	आद्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मार्जार
युँजा	मध्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	घ-घनश्याम
पाया(राशि-नक्षत्र)	लौह - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मकर

Rainstar Jyotish Kendra
Nanak Dairy Road near Ashoka Garden Hodal, Palwal, Haryana
+919050633029
pankajkumar.dadieya@gmail.com

पंचांग

दादा का नाम :
पिता का नाम :
माता का नाम :
जाति :
गोत्र :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1893	पौष	10
पंजाबी	संवत : 2028	पौष	16
बंगाली	सन् : 1378	पौष	15
तमिल	संवत : 2028	मार्गड़ी	16
केरल	कोल्लम : 1147	धनु	16
नेपाली	संवत : 2028	पौष	16
चैत्रादि	संवत : 2028	पौष	शुक्ल 15
कार्तिकादि	संवत : 2028	पौष	शुक्ल 15

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि	15
तिथि समाप्ति काल	25:49:29
जन्म तिथि	15
सूर्योदय कालीन नक्षत्र	मृगशिरा
नक्षत्र समाप्ति काल	09:45:02 घंटे
जन्म योग	आर्द्रा
सूर्योदय कालीन योग	ब्रह्म
योग समाप्ति काल	27:51:14 घंटे
जन्म योग	ब्रह्म
सूर्योदय कालीन करण	विष्टि
करण समाप्ति काल	14:41:56 घंटे
जन्म करण	बव
भयात	25:09:54
भभोग	57:21:16
भोग्य दशा काल	राहु 10 वर्ष 0 मा 21 दि

घात चक्र

मास	आषाढ़
तिथि	2-7-12
दिन	सोमवार
नक्षत्र	स्वाति
योग	परिघ
करण	कौलव
प्रहर	3
वर्ग	मूषक
लग्न	कर्क
सूर्य	मीन
चन्द्र	कुम्भ
मंगल	मेष
बुध	मकर
गुरु	वृष
शुक्र	मिथुन
शनि	कुम्भ
राहु	कर्क

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

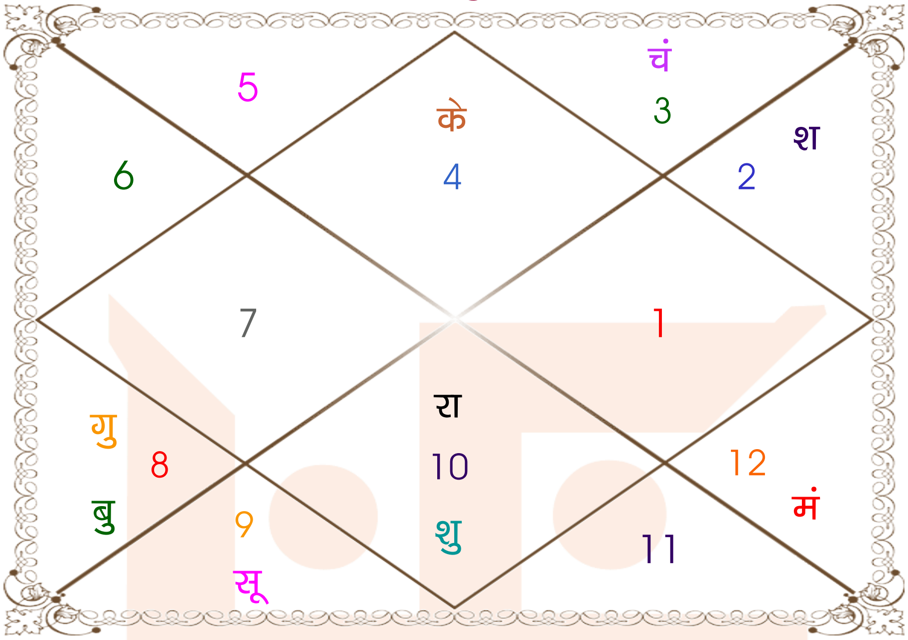

चन्द्र कुंडली

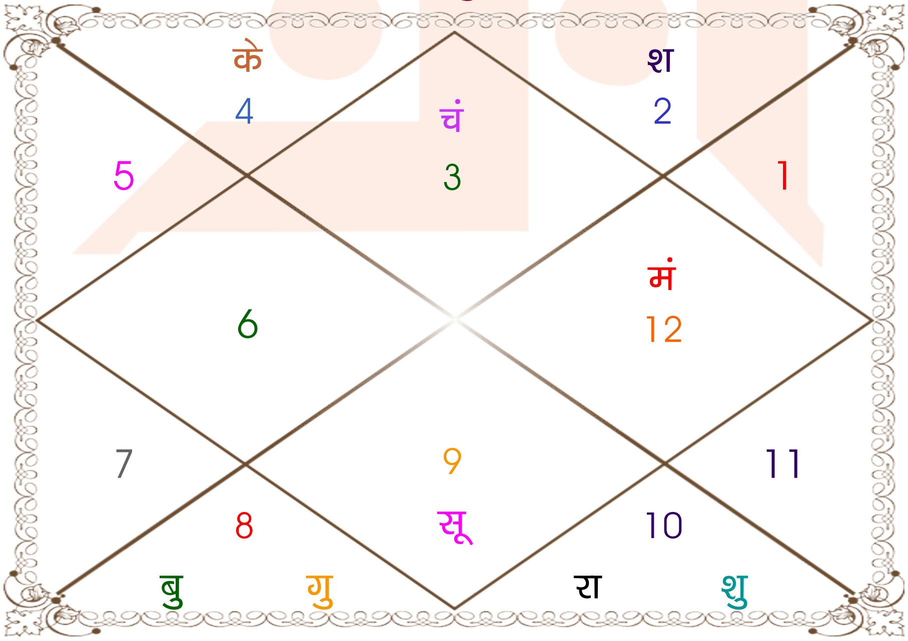

Rainstar Jyotish Kendra
Nanak Dairy Road near Ashoka Garden Hodal, Palwal, Haryana
+919050633029
pankajkumar.dadieya@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

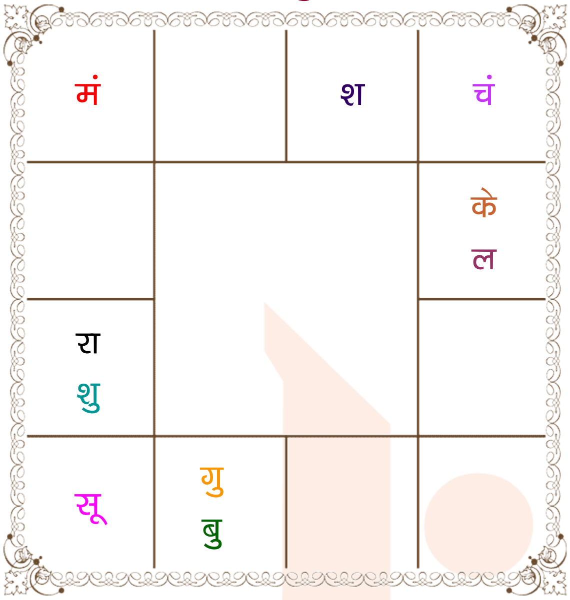

लग्न कुंडली

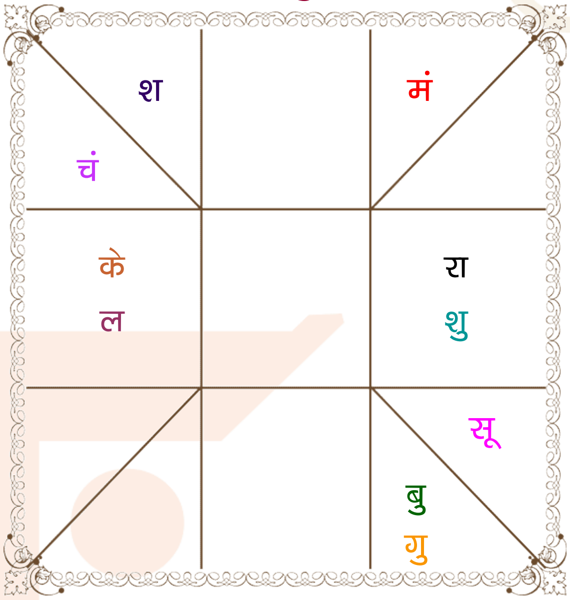

विंशोत्तरी
राहु 10वर्ष 0मा 21दि

राहु

31/12/1971

22/01/2084

राहु	21/01/1982
गुरु	21/01/1998
शनि	21/01/2017
बुध	21/01/2034
केतु	21/01/2041
शुक्र	21/01/2061
सूर्य	21/01/2067
चन्द्र	21/01/2077
मंगल	22/01/2084

योगिनी
मंगला 0वर्ष 6मा 21दि

उल्का

23/07/2022

22/07/2028

उल्का	23/07/2023
सिद्धा	21/09/2024
संकटा	21/01/2026
मंगला	23/03/2026
पिंगला	23/07/2026
धान्या	22/01/2027
भ्रामरी	22/09/2027
भद्रिका	22/07/2028

Rainstar Jyotish Kendra
Nanak Dairy Road near Ashoka Garden Hodal, Palwal, Haryana
+919050633029
pankajkumar.dadieya@gmail.com

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कर्क	15:45:51	309:41:30	पुष्य	4	8	चंद्र	शनि	गुरु	---
सूर्य			धनु	15:46:54	01:01:08	पूर्वाषाढ़ा	1	20	गुरु	शुक्र	सूर्य	मित्र राशि
चंद्र			मिथु	12:32:58	13:58:04	आर्द्रा	2	6	बुध	राहु	शनि	मित्र राशि
मंगल			मीन	09:38:59	00:38:45	उ०भाद्रपद	2	26	गुरु	शनि	शुक्र	मित्र राशि
बुध			वृश्चि	23:16:06	00:56:52	ज्येष्ठा	2	18	मंगल	बुध	चंद्र	सम राशि
गुरु			वृश्चि	28:47:25	00:13:19	ज्येष्ठा	4	18	मंगल	बुध	शनि	मित्र राशि
शुक्र			मक	16:49:23	01:14:04	श्रवण	3	22	शनि	चंद्र	शनि	मित्र राशि
शनि	व		वृष	06:58:34	00:03:14	कृतिका	4	3	शुक्र	सूर्य	बुध	मित्र राशि
राहु	व		मक	11:52:20	00:02:55	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	मंगल	मित्र राशि
केतु	व		कर्क	11:52:20	00:02:55	पुष्य	3	8	चंद्र	शनि	चंद्र	मित्र राशि
हर्ष			कन्या	24:36:43	00:01:16	चित्रा	1	14	बुध	मंगल	राहु	---
नेप			वृश्चि	10:36:59	00:01:56	अनुराधा	3	17	मंगल	शनि	सूर्य	---
प्लूटो			कन्या	08:34:42	00:00:08	उ०फाल्गुनी	4	12	बुध	सूर्य	शुक्र	---
दशम भाव			मेष	10:54:03	--	अश्विनी	--	1	मंगल	केतु	शनि	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:28:11

लग्न-चलित

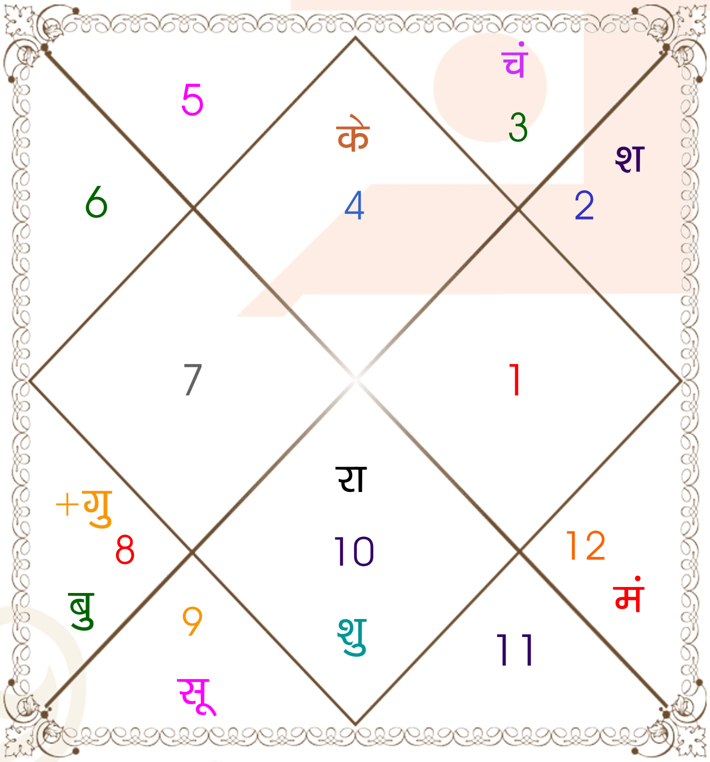

चन्द्र कुंडली

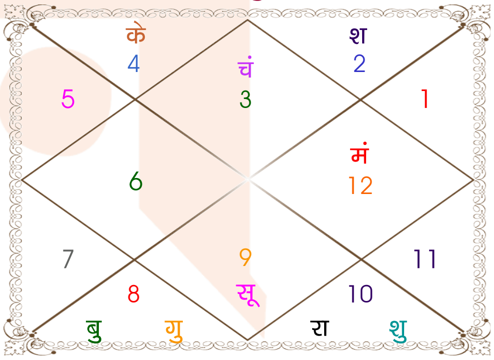

नवमांश कुंडली

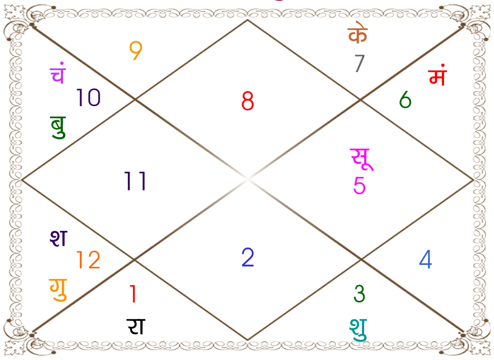

Rainstar Jyotish Kendra
Nanak Dairy Road near Ashoka Garden Hodal, Palwal, Haryana
+919050633029
pankajkumar.dadieya@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	मिथुन	29:57:13	कर्क	15:45:51
2	कर्क	29:57:13	सिंह	14:08:35
3	सिंह	28:19:57	कन्या	12:31:19
4	कन्या	26:42:41	तुला	10:54:03
5	तुला	26:42:41	वृश्चिक	12:31:19
6	वृश्चिक	28:19:57	धनु	14:08:35
7	धनु	29:57:13	मकर	15:45:51
8	मकर	29:57:13	कुम्भ	14:08:35
9	कुम्भ	28:19:57	मीन	12:31:19
10	मीन	26:42:41	मेष	10:54:03
11	मेष	26:42:41	वृष	12:31:19
12	वृष	28:19:57	मिथुन	14:08:35

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कर्क	15:45:51
2	सिंह	10:14:28
3	कन्या	08:40:09
4	तुला	10:54:03
5	वृश्चिक	14:19:34
6	धनु	16:12:21
7	मकर	15:45:51
8	कुम्भ	10:14:28
9	मीन	08:40:09
10	मेष	10:54:03
11	वृष	14:19:34
12	मिथुन	16:12:21

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा
स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा
शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा

चलित कुंडली

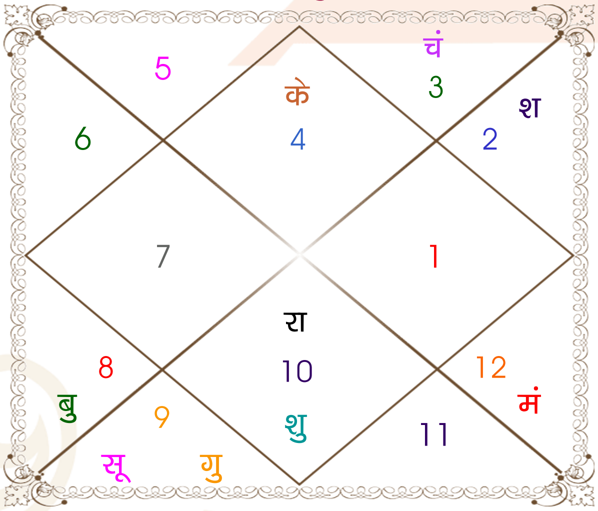

भाव कुंडली

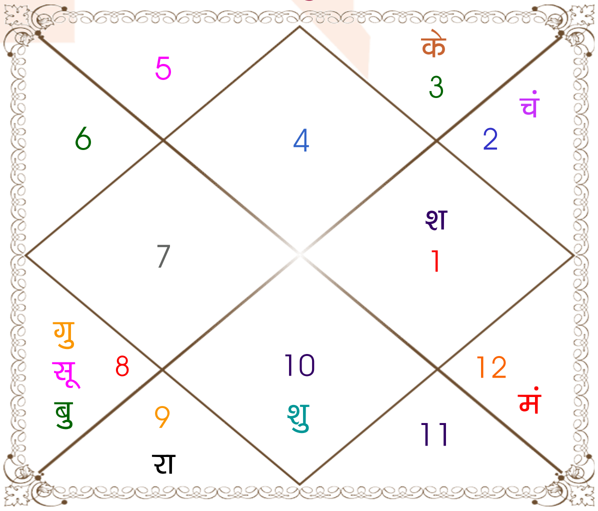

Rainstar Jyotish Kendra
Nanak Dairy Road near Ashoka Garden Hodal, Palwal, Haryana
+919050633029
pankajkumar.dadieya@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : राहु 10 वर्ष 0 मास 21 दिन

राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष
31/12/1971	**21/01/1982**	**21/01/1998**	**21/01/2017**	**21/01/2034**
21/01/1982	**21/01/1998**	**21/01/2017**	**21/01/2034**	**21/01/2041**
00/00/0000	गुरु 10/03/1984	शनि 24/01/2001	बुध 20/06/2019	केतु 19/06/2034
31/12/1971	शनि 22/09/1986	बुध 04/10/2003	केतु 16/06/2020	शुक्र 19/08/2035
शनि 03/01/1972	बुध 28/12/1988	केतु 12/11/2004	शुक्र 17/04/2023	सूर्य 25/12/2035
बुध 23/07/1974	केतु 03/12/1989	शुक्र 13/01/2008	सूर्य 21/02/2024	चंद्र 25/07/2036
केतु 10/08/1975	शुक्र 03/08/1992	सूर्य 25/12/2008	चंद्र 23/07/2025	मंगल 21/12/2036
शुक्र 10/08/1978	सूर्य 23/05/1993	चंद्र 26/07/2010	मंगल 20/07/2026	राहु 09/01/2038
सूर्य 05/07/1979	चंद्र 22/09/1994	मंगल 04/09/2011	राहु 05/02/2029	गुरु 16/12/2038
चंद्र 03/01/1981	मंगल 29/08/1995	राहु 11/07/2014	गुरु 14/05/2031	शनि 25/01/2040
मंगल 21/01/1982	राहु 21/01/1998	गुरु 21/01/2017	शनि 21/01/2034	बुध 21/01/2041

शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष
21/01/2041	**21/01/2061**	**21/01/2067**	**21/01/2077**	**22/01/2084**
21/01/2061	**21/01/2067**	**21/01/2077**	**22/01/2084**	**00/00/0000**
शुक्र 22/05/2044	सूर्य 10/05/2061	चंद्र 22/11/2067	मंगल 19/06/2077	राहु 04/10/2086
सूर्य 23/05/2045	चंद्र 09/11/2061	मंगल 22/06/2068	राहु 08/07/2078	गुरु 26/02/2089
चंद्र 21/01/2047	मंगल 17/03/2062	राहु 22/12/2069	गुरु 13/06/2079	शनि 31/12/2091
मंगल 23/03/2048	राहु 09/02/2063	गुरु 23/04/2071	शनि 22/07/2080	00/00/0000
राहु 23/03/2051	गुरु 28/11/2063	शनि 21/11/2072	बुध 19/07/2081	00/00/0000
गुरु 21/11/2053	शनि 09/11/2064	बुध 22/04/2074	केतु 16/12/2081	00/00/0000
शनि 21/01/2057	बुध 15/09/2065	केतु 22/11/2074	शुक्र 15/02/2083	00/00/0000
बुध 22/11/2059	केतु 21/01/2066	शुक्र 22/07/2076	सूर्य 23/06/2083	00/00/0000
केतु 21/01/2061	शुक्र 21/01/2067	सूर्य 21/01/2077	चंद्र 22/01/2084	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल राहु 10 वर्ष 1 मा 7 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु	
23/07/2025		20/07/2026		05/02/2029		14/05/2031		21/01/2034	
20/07/2026		05/02/2029		14/05/2031		21/01/2034		19/06/2034	
मंगल	13/08/2025	राहु	06/12/2026	गुरु	27/05/2029	शनि	17/10/2031	केतु	30/01/2034
राहु	06/10/2025	गुरु	10/04/2027	शनि	05/10/2029	बुध	04/03/2032	शुक्र	24/02/2034
गुरु	23/11/2025	शनि	04/09/2027	बुध	30/01/2030	केतु	30/04/2032	सूर्य	03/03/2034
शनि	20/01/2026	बुध	14/01/2028	केतु	19/03/2030	शुक्र	11/10/2032	चंद्र	16/03/2034
बुध	12/03/2026	केतु	08/03/2028	शुक्र	04/08/2030	सूर्य	29/11/2032	मंगल	24/03/2034
केतु	02/04/2026	शुक्र	11/08/2028	सूर्य	15/09/2030	चंद्र	19/02/2033	राहु	16/04/2034
शुक्र	01/06/2026	सूर्य	26/09/2028	चंद्र	23/11/2030	मंगल	18/04/2033	गुरु	06/05/2034
सूर्य	20/06/2026	चंद्र	13/12/2028	मंगल	10/01/2031	राहु	12/09/2033	शनि	29/05/2034
चंद्र	20/07/2026	मंगल	05/02/2029	राहु	14/05/2031	गुरु	21/01/2034	बुध	19/06/2034

केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु	
19/06/2034		19/08/2035		25/12/2035		25/07/2036		21/12/2036	
19/08/2035		25/12/2035		25/07/2036		21/12/2036		09/01/2038	
शुक्र	29/08/2034	सूर्य	26/08/2035	चंद्र	12/01/2036	मंगल	03/08/2036	राहु	17/02/2037
सूर्य	20/09/2034	चंद्र	05/09/2035	मंगल	24/01/2036	राहु	25/08/2036	गुरु	09/04/2037
चंद्र	25/10/2034	मंगल	13/09/2035	राहु	25/02/2036	गुरु	14/09/2036	शनि	09/06/2037
मंगल	19/11/2034	राहु	02/10/2035	गुरु	25/03/2036	शनि	08/10/2036	बुध	02/08/2037
राहु	22/01/2035	गुरु	19/10/2035	शनि	28/04/2036	बुध	29/10/2036	केतु	25/08/2037
गुरु	20/03/2035	शनि	08/11/2035	बुध	28/05/2036	केतु	07/11/2036	शुक्र	27/10/2037
शनि	26/05/2035	बुध	27/11/2035	केतु	09/06/2036	शुक्र	02/12/2036	सूर्य	16/11/2037
बुध	26/07/2035	केतु	04/12/2035	शुक्र	15/07/2036	सूर्य	09/12/2036	चंद्र	18/12/2037
केतु	19/08/2035	शुक्र	25/12/2035	सूर्य	25/07/2036	चंद्र	21/12/2036	मंगल	09/01/2038

केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य	
09/01/2038		16/12/2038		25/01/2040		21/01/2041		22/05/2044	
16/12/2038		25/01/2040		21/01/2041		22/05/2044		23/05/2045	
गुरु	23/02/2038	शनि	18/02/2039	बुध	16/03/2040	शुक्र	12/08/2041	सूर्य	10/06/2044
शनि	18/04/2038	बुध	16/04/2039	केतु	06/04/2040	सूर्य	12/10/2041	चंद्र	10/07/2044
बुध	06/06/2038	केतु	10/05/2039	शुक्र	06/06/2040	चंद्र	21/01/2042	मंगल	31/07/2044
केतु	26/06/2038	शुक्र	16/07/2039	सूर्य	24/06/2040	मंगल	02/04/2042	राहु	24/09/2044
शुक्र	21/08/2038	सूर्य	06/08/2039	चंद्र	24/07/2040	राहु	02/10/2042	गुरु	12/11/2044
सूर्य	07/09/2038	चंद्र	08/09/2039	मंगल	14/08/2040	गुरु	13/03/2043	शनि	09/01/2045
चंद्र	06/10/2038	मंगल	02/10/2039	राहु	07/10/2040	शनि	22/09/2043	बुध	01/03/2045
मंगल	26/10/2038	राहु	02/12/2039	गुरु	25/11/2040	बुध	12/03/2044	केतु	23/03/2045
राहु	16/12/2038	गुरु	25/01/2040	शनि	21/01/2041	केतु	22/05/2044	शुक्र	23/05/2045

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	4
भाग्यांक	7
मित्र अंक	1, 4, 6, 7
शत्रु अंक	3, 8
शुभ वर्ष	22,31,40,49,58
शुभ दिन	मंगल, सोम, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, चन्द्र, गुरु
मित्र राशि	कन्या, कुम्भ
मित्र लग्न	तुला, मीन, वृष
अनुकूल देवता	गणेश
शुभ रत्न	मोती
शुभ उपरत्न	चन्द्रमणि
भाग्य रत्न	पुखराज
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	श्वेत
शुभ दिशा	पश्चिमोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	शंख, कपूर, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दही

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	100%	भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख
पुखराज	गुरु	81%	सन्तति सुख, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
मोती	चंद्र	70%	कम खर्च, स्वास्थ्य
हीरा	शुक्र	62%	दम्पति, धनार्जन, सुख
गोमेद	राहु	62%	दम्पति, धनार्जन
लहसुनिया	केतु	52%	स्वास्थ्य, कम खर्च
माणिक्य	सूर्य	41%	शत्रु व रोग, धन हानि
पन्ना	बुध	38%	सन्तति कष्ट, व्यय, पराक्रम हानि
नीलम	शनि	0%	हानि, दाम्पत्य कष्ट, दुर्घटना

रत्न की शुभता

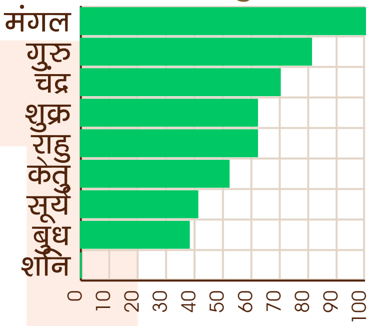

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
राहु	21/01/1982	16%	58%	98%	38%	81%	69%	9%	75%	28%
गुरु	21/01/1998	52%	77%	100%	12%	94%	50%	0%	62%	52%
शनि	21/01/2017	16%	58%	98%	50%	81%	69%	22%	69%	28%
बुध	21/01/2034	52%	58%	100%	56%	81%	69%	0%	62%	52%
केतु	21/01/2041	16%	58%	100%	38%	81%	69%	0%	50%	64%
शुक्र	21/01/2061	16%	58%	100%	50%	81%	75%	9%	69%	58%
सूर्य	21/01/2067	58%	77%	100%	38%	88%	50%	0%	50%	28%
चंद्र	21/01/2077	52%	83%	100%	50%	81%	62%	0%	50%	28%
मंगल	22/01/2084	52%	77%	100%	12%	88%	62%	0%	50%	58%

Rainstar Jyotish Kendra
Nanak Dairy Road near Ashoka Garden Hodal, Palwal, Haryana
+919050633029
pankajkumar.dadieya@gmail.com

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	31/12/1971-10/06/1973	-------------------------	-------------------------
साढेसाती द्वितीय ढैया	10/06/1973-23/07/1975	-------------------------	-------------------------
साढेसाती तृतीय ढैया	23/07/1975-07/09/1977	-------------------------	-------------------------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	04/11/1979-15/03/1980	27/07/1980-06/10/1982	-------------------------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	21/03/1990-20/06/1990	15/12/1990-05/03/1993	15/10/1993-10/11/1993

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	-------------------------
साढेसाती द्वितीय ढैया	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005
साढेसाती तृतीय ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	-------------------------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	-------------------------

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	-------------------------
साढेसाती द्वितीय ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-------------------------	-------------------------
साढेसाती तृतीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-------------------------	-------------------------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	-------------------------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	धनार्जन
साढेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	कम खर्च
साढेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	बुरा स्वास्थ्य
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	पराक्रम
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	दम्पति

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति नवम भाव में स्थित है। यह भाव भाग्य एवं धर्म का प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आप भाग्य पर अल्प मात्रा में ही विश्वास करेंगे तथा कर्म पर विशेष ध्यान देंगे। आपके विचार से कर्म के बिना भाग्य का उदय नहीं होता अतः अपने इस सिद्धांत से आप जीवन में कर्म के द्वारा उन्नति मार्ग प्रशस्त करने में सफल रहेंगे। साथ ही धर्म के प्रति आपकी रुचि अल्प मात्रा में रहेगी तथा धार्मिक कार्य कलापों एवं तीर्थ स्थानों की यात्रा आदि को भी कम ही करेंगे। आयु के साथ साथ आप जीवन में इनके महत्व को भी अवश्य स्वीकार करेंगे। आपको समाज में विशिष्ट सम्मान भी प्राप्त होगा लेकिन इसमें विलम्ब हो सकता है। आप एक पराक्रमी एवं उत्साही व्यक्ति है अतः आपको इस ओर से कोई चिन्ता नहीं होगी।

नवम भाव से द्वादश भाव पर मंगल की चतुर्थ दृष्टि के प्रभाव से आपका व्यय अधिक रहेगा साथ ही शुभाशुभ कार्यों पर आप व्यय करेंगे। जमीन जायदाद पर अधिक से अधिक व्यय करने के इच्छुक रहेंगे इससे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ की प्राप्ति हो सकती है। यद्यपि इसके प्रभाव से जीवन में अनावश्यक विघ्न बाधाएं भी आएंगी परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही दाम्पत्य जीवन का आप सुख पूर्वक उपभोग करेंगे। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि से आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा समाज में सभी लोग आपके पराक्रम से प्रभावित रहेंगे जिससे आपको इच्छित मान सम्मान की प्राप्ति होगी। साथ ही भाई बहनों का भी न्यूनाधिक सहयोग मिलता रहेगा। चतुर्थ भाव पर इसकी दृष्टि के प्रभाव से आप जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से युक्त रहेंगे तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य सांसारिक सुख संसाधनों की भी आपको परिश्रम पूर्वक प्राप्ति होगी परन्तु माता का सुख एवं स्वास्थ्य मध्यम रहेगा।

इस प्रकार मंगल के इस प्रभाव से आप कर्म योगी रहेंगे तथा परिश्रम एवं पराक्रम से अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करके भाग्योदय करेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा पारिवारिक जन भी आपसे सन्तुष्ट रहेंगे। आप भी उचित रूप से उनका लालन पालन करेंगे। साथ ही आपसी संबंधों में मधुरता भी बनी रहेगी।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुडली में गुरु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राहमण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

षष्ठभाव में सूर्य हो तो जतक वीर्यवान्, मातुल कष्टकारक, तेजस्वी, शत्रुनाशक, बलवान्, श्रीमान, निरोगी एवं न्यायवान् होता है।

धनु राशि में रवि हो तो जातक विवेकी, योगमार्गरत, बुद्धिमान्, धनी, आस्तिक, व्यवहार कुशल, दयालु, शान्त, लोकप्रिय एवं शीघ्र क्रोधित होने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य छठे भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा आयु भी अच्छी होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। इसके साथ ही वे आपको शत्रुओं तथा अन्य सांसारिक कष्टों से नित्य सुरक्षित रखने के लिए भी तत्पर रहेंगे।

आप भी उनका हमेशा हार्दिक सम्मान करेंगे एवं नित्य उनकी आज्ञा पालन करने में भी तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे कुछ समय के लिए संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु उसके बाद सब कुछ सामान्य एवं पूर्ववत् हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उन्हें हमेशा वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता करते रहेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

चन्द्र

बारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक मृदुभाषी, चिन्ताशील, एकान्तप्रिय, क्रोधी, कफरोगी, चंचल, नेत्ररोगी एवं अधिक व्यय करने वाला होता है।,

मिथुन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान, अध्ययनशील, सुन्दर, रतिकुशल, भोगी, मर्मज्ञ, नेत्र चिकित्सक, अच्छा वक्ता एवं अच्छा अन्तर्ज्ञान वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य अच्छा रहेगा तथा यदा कदा कष्टों का भी सामना करना पड़ेगा। लेकिन आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव रहेगा तथा जीवन में आपको प्रायः यथाशक्ति अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आप उनसे अच्छे तथा पुण्य के कार्यो के प्रति प्रवृत होंगे तथा समयानुसार दानादि को भी उन्हीं के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन आप कुछ अवसरों को छोड़कर करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं होंगे क्योंकि आप में काफी मतभेद रहेंगे तथापि सांसारिक संबंधों में कोई तनाव नहीं रहेगा एवं सामंजस्य पूर्वक आप के परस्पर व्यवहार चलते रहेंगे। साथ ही उन्हें कष्ट के समय आप अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता अवश्य प्रदान करेंगे।

मंगल

नौवें भाव में मंगल हो तो जातक अभिमानी, क्रोधी, नेता, द्वेषी, अल्पलाभ करने वाला, यशस्वी, असन्तुष्ट, भातृविरोधी, अधिकारी एवं ईर्ष्यालु होता है।

मीन राशि में मंगल हो तो जातक गौवरवर्ण, कामुक, आज्ञाकारी गन्दा, अस्थिर जीवन, रोगी, प्रवासी, मान्त्रीक, बन्धु-द्वेषी, नास्तिक, हठी, धूर्त और वाचाल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल नवम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। आपके प्रति उनका अपनत्व रहेगा एवं जीवन के सुख दुःख में आपका नित्य सहयोग करते रहेंगे। इसके साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी वे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता अवश्य प्रदान करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे वे युक्त रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे एवं सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण उनमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थाई रहेगी। इसके साथ ही उनकी भाग्योन्नति में भी आप समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगे।

बुध

पंचमभाव में बुध हो तो जातक उद्यमी, विद्वान्, कवि, प्रसन्न कुशाग्रबुद्धि, गण्य-मान्य, सुखी, वाद्यप्रिय एवं सदाचारी होता है।

वृश्चिक राशि में बुध हो तो जातक व्यसनी, दुराचारी, मुर्ख, ऋणी भिक्षुक, अनैतिक चरित्र, रतिक्रिया की अति करने वाला, गुप्तांगों के रोगों से पीड़ित, स्वार्थी एवं अपशब्द बोलने वाला होता है।

गुरु

पंचमभाव में गुरु हो तो जातक नीतिविशारद, सन्ततिवान्, सटटे से धन प्राप्त करने वाला, कुलश्रेष्ठ, लोकप्रिय, कुटुम्ब में सबसे ऊँचा स्थान, ज्योतिषी एवं आस्तिक होता है।

वृश्चिक राशि में गुरु हो तो जातक शास्त्रज्ञ, राजमन्त्री, कार्यकुशल, सुगठित शरीर, अपनी उच्चता का दिखावा करने वाला, स्वार्थी, निर्बलस्वास्थ्य, दुःखी एवं कामुक होता है।

शुक्र

सप्तमभाव में शुक्र हो तो जातक लोकप्रिय, धनिक, चिन्तित, विवाह के बाद

भाग्योदय, साधुप्रेमी, स्त्री से सुख, कामी, भाग्यवान् गानप्रिय, विलासी, अल्पव्यभिचारी चंचल एवं उदार होता है।

मकर राशि में शुक्र हो तो जातक बलहीन, कृपण, घ्दयरोगी, दुखी, मानी, नीच जाति की स्त्रियों में रुचि, सिद्धान्तहीन एवं अनैतिक चरित्र होता है।

शनि

ग्यारहवें भाव में शनि हो तो जातक बलवान् विद्वान, दीर्घायु, शिल्पी, सुखी, चंचल, क्रोधी, योगाभ्यासी, नीतिवान् परिश्रमी, व्यवसायी, पुत्रहीन, कन्याप्रज्ञ एवं रोगहीन होता है।

वृष राशि में शनि हो तो जातक असत्य भाषी, द्रव्यहीन, मूर्ख, वचनहीन, सफल, एकान्तप्रिय, छोटी-छोटी बातों के कारण चिंतित एवं संयमी होता है।

राहु

सप्तम भाव में राहु हो तो चतुर, लोभी, दुराचारी, दुष्कर्मी वातरोगजनक, भ्रमणशील, व्यापार से हानिदायक एवं स्त्रीनाशक होता है।

मकर राशि में राहु हो तो जातक मितव्ययी, कुटुम्बहीन एव दाँत रोगी होता है।

केतु

लग्न (प्रथम) में केतु हो तो जातक चंचल मूर्ख दुराचारी, भीरु तथा वृश्चिक राशि में हो तो सुखकारक, धनी एवं परिश्रमी होता है।

कर्क राशि में केतु हो तो जातक वातविकारी, भूतप्रेत पीड़ित एवं दुःखी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- बुध
(21/01/2017 - 21/01/2034)

बुध की महादशा 21/01/2017 को आरम्भ और 17 वर्ष की होकर 21/01/2034 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध पंचम भाव में स्थित है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चल रही थी। शनि के फलस्वरूप आपको यश, ख्याति, सफलता, उत्तम शिक्षा और धन की प्राप्ति तथा जीविका में उन्नति हुई होगी। बुध की वर्तमान दशा में आपकी शिक्षा उत्तम होगी, सट्टे में लाभ तथा सन्तान से सुख मिलेगा।

स्वास्थ्य :

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप सक्रिय, आशावादी तथा स्फूर्तिवान होंगे। आपको अक्सर पाचन क्रिया की शिकायत हो सकती है। मौसम में परिवर्तन के कारण आपको ज्वर, संक्रामक बीमारी, चर्मरोग तथा स्नायविक समस्या हो सकती है। इस दशा के दौरान आपको कोई बड़ी बीमारी नहीं होगी। सतर्कता बरतकर इन मामूली बीमारियों से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। आपको सट्टे तथा अन्य निवेश से लाभ होगा। आपको अचानक लाभ या अवकाश ग्रहणसे लाभ, ग्रेच्यूइटी आदि की प्राप्ति होगी। आपका निवेश शुभदायक और आर्थिक स्थिति उत्तम होगी। कुछ मामूली नुकसान भी हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों का स्थानान्तर तथा परिवर्तन हो सकता है जो लाभदायक होगा। वाणिज्य-व्यापार से सम्बद्ध सभी कार्यों में आप अच्छा करेंगं। सहकर्मियों तथा सहायकों के कारण कुछ समस्याएं हो सकती हैं। दशा की प्रगति के साथ-साथ स्थिति में सुधार होगा। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों के कार्य में परिवर्तन होगा। आप आपने कार्य में परिवर्तन या अन्य आवश्यक परिवर्तन कर सकते हैं जो अन्ततः लाभदायक होंगे। आपका उपार्जन तथा लाभ अच्छा होगा। जीविका के लिए लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग तथा बौद्धिक कार्य कर सकते हैं। रत्न, पुस्तक, लेखन-सामग्री, कम्प्यूटर तथा हस्तनिर्मित वस्तुओं का व्यपार लाभदायक हो सकता है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

पारिवारिक सुख और वाहन की दृष्टि से यह दशा आपके लिये उत्तम होगी। आपको जमीन-जायदाद या ऐसी अन्य सम्पत्ति से लाभ होगा। आपको यातायात से भी लाभ होगा। मंगल की अन्तर्दशा में आप की छोटी और शनि की अन्तर्दशा में दूर की यात्रा होगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आप की शिक्षा अति उत्तम होगी। आपका प्रशिक्षण अच्छा होगा और आप परीक्षा तथा प्रतियोगिता में सफल होंगे। आपकी लेखा, वाणिज्य, साहित्य, कम्प्यूटर विज्ञान, रचनात्मक पत्रकारिता, शिक्षण तथा शैक्षिक सेवा आदि में रुचि होगी। आप

प्रतिभाशाली, कूटनीतिक तथा बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में आपको रुचि होगी। आपका मस्तिष्क बौद्धिक तथा विश्लेषणात्मक होगा और सभी बौद्धिक कार्यों में आप अच्छा करेंगे।

परिवार :

आपके बच्चों के साथ आपका सम्बन्ध बहुत अच्छा रहेगा और उनसे आपको सुख मिलेगा। वे आप से दूर जा सकते हैं या उन्हें कुछ मामूली समस्याएं हो सकती हैं जो दशा की उन्नति के साथ गुजर जाएंगी। आपके जीवन साथी को हर प्रकार का लाभ प्राप्त होगा, उन्हें सुख की प्राप्ति होगी और उनकी मनोकामनाएं पूरी होंगी। आपके जीवन साथी के साथ आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता के लिये यह दशा लाभदायक होगी जबकि आपके पिता को सम्पत्ति और समृद्धि की प्राप्ति होगी, उनका भाग्यादेय और यात्रा होगी तथा बौद्धिक कार्यों में उनकी रुचि होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को कठिन परिश्रम करना होगा, उनकी छोटी यात्रा होगी और सम्बन्धियाँ से सहायता मिलेगी जबकि आपके बड़े भाई-बहनों को साझेदारों से लाभ मिलेगा, उनकी शादी होगी और वाणिज्य व्यापार में सफलता मिलेगी। आपका उनके साथ संबंध अच्छा रहेगा। बुध की इस दशा में आपको सुख मिलेगा, वैवाहिक जीवन उत्तम रहेगा, आध्यात्मिक कार्यों में रुचि होगी तथा अच्छे पद की प्राप्ति होगी।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर दशा के कारण आपको सम्पत्ति तथा सुख मिलेगा और शिक्षा उत्तम होगी। केतु कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप सफलता, यश और ख्याति मिलेगी। सूर्य की अन्तर्दशा के कारण लाभ तथा विवाह हो सकता है। चन्द्र की अन्तर्दशा में स्वास्थ्य खराब हो सकता है तथा ननिहाल से लाभ हो सकता है। मंगल की अन्तर्दशा में जीवन-वृत्ति में उन्नति तथा छोटी यात्रा होगी। राहु की अन्तर्दशा कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकती है। गुरु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप लाभ तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी जबकि लग्नेश शनि की अन्तर्दशा में यशा, ख्याति और सफलता मिलेगी।

अंतर्दशा :- बुध – चन्द्र
(21/02/2024 - 23/07/2025)

आपकी बुध की महादशा 21/01/2017 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी, जिसकी अवधि 1 वर्ष 5 मास होगी। आपके लिए यह 21/02/2024 को प्रारंभ होकर 23/07/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र माता, सरकारी कृपा और चेहरे की चमक का कारक है।

इस अवधि में आपके खर्चे बढ़ेंगे मगर वे शुभ और धार्मिक कार्यों पर होंगे। यात्राएं हो सकती हैं। विदेश जा सकते हैं। ज्ञानार्जन में रुचि होगी। मातहत और किरायेदार सहयोग करेंगे। मुकदमे में जीत होगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

आपके जीवनसाथी के कार्यालय में सुविधाएं उत्तम होंगी; विस्तृत कार्यों में सफल होंगे। आपके पिता अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं, उनका घरेलू जीवन सुखी रहेगा, अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं, अचल संपत्ति और भूमि से लाभ होगा। माता सुखी, भाग्यशाली और धनी बनेंगी।

आपके भाई-बहन शिक्षा और कार्यक्षेत्र में सफल होंगे, धन और प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे; आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। घरेलू जीवन सुखी रहेगा। आपकी संतान के जीवन में परिवर्तन आ सकता है। अगर वे कार्यरत हैं तो खर्चे बढ़ सकते हैं, यात्रा, तबादले, परिवर्तन का संकेत है।

अगर आप सेवारत हैं तो साझेदारी से लाभ होगा। परामर्शदाताओं को संचार माध्यम से लाभ हो सकता है।

स्वास्थ्य, विशेषकर नेत्रों और पैरों का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए सफेद चीजें, वस्त्र, चावल और दूध का दान करें।

अंतर्दशा :- बुध – मंगल
(23/07/2025 - 20/07/2026)

आपके लिए बुध की महादशा 21/01/2017 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन रहेगी। यह 23/07/2025 को प्रारंभ होकर 20/07/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, महत्वाकांक्षा और आत्मविश्वास का कारक है।

आपकी महत्वाकांक्षाएं पूर्ण होंगी। सौभाग्यशाली रहेंगे। ज्ञान-विज्ञान के कार्यों में रुचि होगी। लंबी यात्रा हो सकती है। विविध गतिविधियों में सक्रिय रहेंगे। भाई-बहनों से संबंध उत्तम रहेंगे। स्वास्थ्य और रोग प्रतिरोधक क्षमता उत्तम रहेंगे। स्पर्धियों पर विजय होगी। धन के संचय में कुछ कठिनाई हो सकती है। अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। जायदाद से आय में वृद्धि होगी। आपके जीवनसाथी को शत्रुओं पर विजय मिलेगी। आपके पिता के आत्मविश्वास, ऊर्जा और कार्यक्षमता उत्तम होंगे। माता के लिए स्पर्धा में सफलता, उत्तम स्वास्थ्य, सफलता और उच्चपद का संकेत है।

आपके भाई-बहनों को साझेदारी से लाभ होगा; व्यापार में लाभ, धन, सफलता, निवेश से लाभ का योग है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, तकनीकी विषयों में सफल हो सकते हैं। अगर वे कार्यरत हैं तो निवेश से लाभ होगा, उच्च पद मिलेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो भूतकाल की साख से लाभ होगा, आय में वृद्धि होगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ेंगे, यात्राएं हो सकती हैं। व्यापारी स्पर्धा में सफल रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पैरों में मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए लाल वस्त्र, लाल दाल और लाल चंदन दान में दें।

अंर्तदशा :- बुध - राहु
(20/07/2026 - 05/02/2029)

आपके लिए बुध की महादशा 21/01/2017 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा राहु की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 20/07/2026 को प्रारंभ होकर 05/02/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक समृद्धि और अचानक, अप्रत्याशित घटनाओं का कारक है।

इस अवधि में आपको साझेदारी से लाभ होगा। व्यापार में लाभ होगा। लाभ में वृद्धि होगी। इच्छाशक्ति उत्तम होगी, स्वतंत्र निर्णय लेंगे। समाज में सफलता मिलेगी। व्यापार में अचानक लाभ हो सकता है। स्पर्धियों पर विजय होगी। विवाह हो सकता है। व्यापार संबंधी यात्रा हो सकती है; विदेश भी जा सकते हैं। उच्चपद प्राप्त होगा। अन्य लोग मदद करेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप दूसरों की सहायता करेंगे।

आपके जीवनसाथी को धन का लाभ होगा। आपके पिता को निवेश और सट्टेबाजी में लाभ हो सकता है। माता अचल संपत्ति प्राप्त करेंगी; घरेलू सुख रहेगा। आपके भाई-बहनों के लिए सौभाग्य, निवेश में लाभ, यात्रा, शिक्षा में प्रसिद्धि, भौतिक सुखों का संकेत है।

आपकी संतान शिक्षा के लिए समर्पित रहेगी, दृढ़प्रतिज्ञ होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो इच्छाएं पूर्ण होंगी, कार्य में लाभ होगा, धनी बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो आय में वृद्धि होगी। परामर्शदाताओं का लाभ बढ़ेगा, व्यस्त रहेंगे। व्यापारियों का लाभ बढ़ेगा, कार्यप्रणाली उत्तम होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए हनुमानजी के बजरंग बाण का पाठ करें।

अंतर्दशा :- बुध - गुरु
(05/02/2029 - 14/05/2031)

आपके लिए बुध की महादशा 21/01/2017 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में आठवीं अंतर्दशा बृहस्पति की है, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन है। आपके लिए यह 05/02/2029 को प्रारंभ होकर 14/05/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, धन, समृद्धि और उच्चकोटि के ज्ञान का कारक है।

इस अवधि में आप ज्ञानार्जन करेंगे, परीक्षा में सफलता मिलेगी। वरिष्ठजन आपसे प्रसन्न रहेंगे। सम्मान में वृद्धि होगी। सौभाग्य और समृद्धि का योग है। आपके प्रभावशाली मित्र होंगे; कला में रुचि होगी। व्यापार और सट्टेबाजी में लाभ हो सकता है। बोनस, सेवानिवृत्ति धन आदि से अचानक लाभ हो सकता है। पराविद्या, तंत्र-मंत्र आदि में रुचि हो सकती है। आत्म-विश्वास में वृद्धि होगी, आध्यात्मिक उन्नति होगी, समाज में प्रतिष्ठा बढ़ेगी, धनी बनेंगे।

आपके जीवनसाथी धनी बनेंगे। आपके पिता का मानसिक विकास होगा; सुअवसर मिलेंगे। माता धनी बनेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए मानसिक विकास, साझेदारी में लाभ, व्यापार में लाभ, यात्रा का संकेत है।

आपकी संतान के आत्म-विश्वास में वृद्धि होगी, परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो समृद्धि में वृद्धि होगी।

अगर आप सेवारत हैं तो तबादला या परिवर्तन हो सकता है; स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। परामर्शदाताओं के सकारात्मक परिवर्तन हो सकते हैं। व्यापारियों के लाभ में वृद्धि होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पाचनतंत्र की मामूली शिकायत हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए पीली दाल, पीले वस्त्र और शहद दान में दें।